अध्याय—5

अध्याय–5

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

(5.1) प्रस्तावना

सारांश किसी भी अध्ययन को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इस अध्याय में लघु शोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिये गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिये सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

(5.2) समस्या कथन :–

"उच्चतर माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों एवं सामान्य विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन"।

(5.3) शोध कार्य के उद्देश्य :–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।

2. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

4. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(5.4) शोध कार्य की परिकल्पनाएँ

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(5.5) शोध में प्रयुक्त चर :–

स्वतंत्र चर :–

- एन.सी.सी. कैडेट्स
- एन.एस.एस. स्वयं सेवक
- सामान्य विद्यार्थी

एन.सी.सी. कैडेट्स :–

कक्षा–12 के ऐसे विद्यार्थी जो एन.सी.सी. कार्यक्रम में नामांकित हैं तथा कम से कम एक कैम्प में प्रतिभाग कर चुके हों ।

एन.एस.एस. स्वयं सेवक :–

कक्षा–12 के वे विद्यार्थी जो एन.एस.एस. के सक्रिय प्रतिभागी हैं तथा कम से कम एक एन.एस.एस. कैम्प में प्रतिभाग कर चुके हों।

सामान्य विद्यार्थी :–

ऐसे विद्यार्थी जो कक्षा–12 के नियमित छात्र–छात्रा तो है। परन्तु एन.सी.सी. या एन.एस.एस. के प्रतिभागी नहीं हैं।

(2) आश्रित चर :–

- समायोजन क्षमता
- नैतिक मूल्य

(5.6) न्यादर्श का चयन :

किसी भी अनुसंधान कार्यो में प्रतिदर्श का चुनाव एवं उसकी संख्या महत्वपूर्ण पहलू होता है प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा का ध्यान रखते हुए प्रतिदर्श को उद्देश्य पूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है। उसमें शोधकर्ती द्वारा भोपाल शहर के तीन स्कूल जिसमें एन.सी.सी. व एन.एस.एस. कार्यकलाप संचालित होते है का चयन प्रस्तुत शोध कार्य हेतु ये स्कूल लिये गये है।

1. इस शोध कार्य के अंतर्गत 90 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

2. प्रतिदर्श के रूप में कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों को चुना गया।

3. जिसमें से 90 विद्यार्थी उपस्थित रहे है।

4. जिसमें से 45 छात्र एवं 45 छात्राएँ उपस्थित रही।

5. जिसमें एन.सी.सी. के 30, एन.एस.एस. के 30 एवं 30 सामान्य विद्यार्थी है।

(5.7) शोध उपकरण : दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया गया –

1. विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता के परीक्षण हेतु आर.के. ओझा की समायोजन परिसूची (B.A.I.) के हिन्दी रूपान्तरण का उपयोग किया गया। यह अंकुर मनोविज्ञान संस्था लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया है।

2. नैतिक मूल्यों के परीक्षण के लिये एल. एन. दुबे 2009 का विद्या भारती प्रकाशन सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर द्वारा निर्मित मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

(5.8) शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ :–

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

(1) मध्यमान

(2) मानक विचलन

(3) एफ. (F) परीक्षण

(4) टी. (T) परीक्षण

(5.9) प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों का प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. कैडेट्स एन.एस.एस. स्वयंसेवकों तथा सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्यों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषण उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है।

(5.10) निष्कर्ष :–

(A) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की समायोजन क्षमता से संबंधित निष्कर्ष –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता औसत या सामान्य स्तर की है।

3. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवक व सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर है।

4. एन.एस.एस. स्वयं सेवकों की समायोजन क्षमता सर्वाधिक है।

5. सामान्य छात्रों की समायोजन क्षमता तुलनात्मक रूप से सबसे कम है।

6. एन.सी.सी. कैडेट्स व एन.एस.एस. स्वयं सेवकों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर है।

7. एन.सी.सी. कैडेट्स व सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर है।

8. एन.एस.एस. स्वयं सेवक और सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर है।

(B) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों से संबंधित निष्कर्ष –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के समूह में नैतिक मूल्यों का मानक विचलन छात्रों की अपेक्षा अधिक है। अतः छात्र समूह छात्राओं की अपेक्षा नैतिक मूल्य के संदर्भ में अधिक समांगी है।

3. एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवक व सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

4. नैतिक मूल्य के संदर्भ में एन.सी.सी. कैडेट्स सर्वोच्च स्थान पर है।

5. सामान्य विद्यार्थी नैतिक मूल्य के संदर्भ में तुलनात्मक रूप से निम्न स्थान पर है तथा उनका नैतिक मूल्य प्राप्तांक औसत है।

6. एन.सी.सी. कैडेट्स व एन.एस.एस. स्वयं सेवको के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

7. एन.सी.सी. कैडेट्स व सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

8. एन.एस.एस. स्वयं सेवक व सामान्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

(5.11) सुझाव :–

1. समायोजन क्षमता व्यक्तित्व विकास के लिये परम आवश्यक है, अतः पाठ्यक्रम में समायोजन क्षमता के विकास के लिये एन.सी.सी. व एन.एस.एस. कार्यक्रमों को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

2. अभिभावकों एवं अध्यापकों को विद्यार्थियों को एन.सी.सी. व एन.एस.एस. कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए।

3. विद्यालय में विद्यार्थियों को एन.सी.सी. व एन.एस.एस. में प्रतिभाग करने के लाभो से परिचित कराने के लिये समुचित मार्गदर्शन की व्यवस्था की जानी चाहिए।

4. एन.सी.सी. व एन.एस.एस. में प्रतिभाग करने हेतु छात्र व छात्राओं में किसी प्रकार का भेद नहीं करना चाहिए।

5. एन.सी.सी. व एन.एस.एस. आदि कार्यक्रमों को विधिवत् आयोजित किया जाना चाहिए।

6. एन.सी.सी. व एन.एस.एस. कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने वाले छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये जाने चाहिये।

(5.12) भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. एन.सी.सी. व एन.एस.एस. के विभिन्न आयामों पर समान प्रकार के शोध कार्य किये जा सकते हैं।

2. एन.सी.सी. व एन.एस.एस. प्रशिक्षण का विद्यार्थियों पर प्रभाव–विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है।

3. विश्वविद्यालय स्तर पर एन.सी.सी. व एन.एस.एस. प्रशिक्षण के संबंध में शोध कार्य किये जा सकते हैं।

4. विद्यार्थियों की एन.सी.सी. व एन.एस.एस. के प्रति जागरूकता जानने के लिये शोध कार्य किये जा सकते हैं।

5. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के एन.सी.सी. कैडेट्स व एन.एस.एस. स्वयं सेवकों के मध्य समायोजन क्षमता व नैतिक मूल्यों के संबंध में इस प्रकार का अध्ययन किया जा सकता है।

6. एन.सी.सी. व एन.एस.एस. के अलावा अन्य कार्यक्रमों जैसे स्काउट एवं गाइड, रेंजर्स एवं रोवर्स के संबंध में भी इस प्रकार का अध्ययन किया जा सकता हैं।

●●●●●●●